संपादकीय

गैरजरूरी खींचतान में फंसे पंजाब-हिमाचल

सही मायनों में पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में सीमा प्रवेश शुल्क को लेकर जारी विवाद ने देश के संघीय ढांचे में व्याप्त एक गहरी खामी को ही उजागर किया है। जो बताता है कि देश के राज्यों की राजस्व जरूरतों तथा अंतर्राज्यीय आवागमन के सिद्धांतों के बीच टकराव के कारण मौजूद हैं। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि हिमाचल प्रदेश फिलहाल वित्तीय संकट की चुनौती से रूबरू है। उसने अपने वित्तीय संसाधन बढ़ाने के लिये दूसरे राज्यों से आने वाले वाहनों पर राज्य में प्रवेश करने का शुल्क लगभग दोगुना करने का निर्णय लिया है। हालांकि, हिमाचल प्रदेश ने यह फैसला अपने आय के स्रोतों को बढ़ाने के लिए लिया था। लेकिन यह वित्तीय फैसला बाद में हिमाचल प्रदेश व पंजाब में राजनीतिक व आर्थिक विवाद का रूप ले चुका है। यही वजह है इस फैसले से ज्यादा प्रभावित राज्य पंजाब ने भी हिमाचल प्रदेश के वाहनों पर ऐसे ही कर बढ़ाने की धमकी दे दी है। वास्तव में हिमाचल सरकार का यह फैसला दूरगामी दृष्टिकोण को नहीं दर्शाता है। यह सर्वविदित है कि हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था बहुत अधिक हद तक पर्यटन उद्योग पर ही निर्भर है। ऐसे में इस कदम का राज्य के पर्यटन उद्योग पर नकारात्मक असर भी पड़ सकता है। यह बढ़ाया गया प्रवेश शुल्क पर्यटकों पर अतिरिक्त बोझ डाल सकता है। खासकर पड़ोसी राज्य पंजाब से आने वाले कम बजट के साथ यात्रा पर निकले पर्यटकों के लिये, जो कि सप्ताहांत में आने वाले पर्यटकों का एक बड़ा हिस्सा है। निःसंदेह, इस फैसले से ऐसे पर्यटक हतोत्साहित हो सकते हैं। इस समस्या का एक पहलू यह भी है कि मौजूदा प्रतिस्पर्धी पर्यटन के परिदृश्य में टैक्स बढ़ाए जाने पर पर्यटक वैकल्पिक पहाड़ी पर्यटक स्थलों की ओर रुख कर सकते हैं। राज्य द्वारा बाद में इस कर-वृद्धि के फैसले की समीक्षा करने का निर्णय लेना, निश्चित रूप से इस मुद्दे की आर्थिक संवेदनशीलता को ही दर्शाता है। यह भी एक हकीकत है कि दो राज्यों के बीच लिए गए कर बढ़ाने के ऐसे फैसलों पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत होनी चाहिए। यह जानते हुए कि हिमाचल प्रदेश गंभीर आर्थिक चुनौती का सामना कर रहा है, पंजाब की प्रतिक्रिया संवेदनशील ढंग से सामने आनी चाहिए थी। ऐसे में पंजाब की हिमाचल की तर्ज पर कर बढ़ाने की चेतावनी प्रतिशोधात्मक नीति पर चलने के अप्रिय फैसले को ही उजागर करती है। इस तरह की बदले में कर लगाने की नीति राजनीतिक दृष्टि से भले ही सुविधाजनक लगती हो, लेकिन आम लोगों को इसका खमियाजा भुगतना पड़ता है।

विनोद शर्मा, संपादक

मलयालम को ताकतवर बनाने का श्रेय लेने की होड़

मलयालम को आधिकारिक भाषा बनाने का स्थानीय नागरिक स्वागत तो कर रहे हैं, लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि इस कानून के नाम से ही अलगाववादी और वर्चस्ववादी झलक मिलती है।, केरल के बौद्धिकों के एक वर्ग का कहना है कि बेहतर होता है कि इस कानून का नाम 'मलयालम भाषा एक्ट 2025' की जगह 'केरल स्टेट लैंग्वेज एक्ट 2025' होता। इससे समावेशी संदेश जाता। यहां के बौद्धिकों का तर्क है कि इस विधेयक में मलयालम की जगह बेहतर होता कि राज्य में प्रयोग में लाई जाने वाली तमिल,कन्नड़, कोंकणी, तुलु और गुजराती का भी जिक्र होता। केरल में जंगलों और दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों की अपनी भाषाएं भी हैं। वे मलयालम का इस्तेमाल कम करते हैं। इसलिए एक वर्ग का मानना है कि उनकी भाषाओं की अस्मिता की रक्षा का बोध भी इस कानून में होना चाहिए था। बेशक केरल के विधानसभा चुनाव में मलयालम को आधिकारिक दर्जा मिलना बड़ा मुद्दा होगा। राज्य की राजनीति में प्रभावी दखल देने की ताक में बैठी भाजपा, कांग्रेस और वाममोर्चा, सभी इसका श्रेय लेने की कोशिश करेंगे।

उमेश चतुर्वेदी

केरलम् में विधानसभा चुनावों के बीच मलयालम को राज्य की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलने का श्रेय लेने का सियासी खेल बढ़ता जा रहा है। राज्य का नाम केरलम् किया जाना और इसके हफ्तेभर बाद ही मलयालम को आधिकारिक भाषा की मंजूरी मिलना कुछ लोगों की नजर में भले ही संयोग हो, लेकिन ऐसा नहीं है। राज्य में विधानसभा चुनाव की रणभेरी बजने की औपचारिकता भर बाकी है। इस संदर्भ में राजनीतिक दलों द्वारा इन दोनों कदमों का श्रेय लेने की होड़ मचना स्वाभाविक है। लेकिन भाषा विधेयक को लेकर केरल की सीमाओं के बाहर सवाल भी उठने शुरू हो गए हैं। इसमें दो राय नहीं कि गैर हिंदीभाषी इलाके अपनी भाषाओं और सांस्कृतिक परंपराओं को अपनी अस्मिता से जोड़कर देखते हैं। हिंदीभाषी राज्यों में अपनी हिंदी या स्थानीय भाषाओं को लेकर ऐसी सोच नहीं दिखती। मलयालम को केरलम् की आधिकारिक भाषा बनाने की मांग बहुत पुरानी है। इस दिशा में पहला प्रयास करीब दस साल पहले कांग्रेस की अगुआई वाली संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा यानी यूडीएफ की सरकार ने किया था। 2015 में ओमन चांडी सरकार ने इस विधेयक को पारित कराया था। लेकिन तब इस विधेयक पर पड़ोसी कर्नाटक सरकार ने कड़ा एतराज जताया था। जब इस विधेयक को मंजूरी के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा गया तो राष्ट्रपति ने इसे 1963 के ऑफिशियल भाषा एक्ट के नियमों को हटाकर जमा करने के सुझाव के साथ वापस भेज दिया था। फिर दस साल बाद मौजूदा वाममोर्चा की सरकार ने इसे नए रूप में पारित किया। इस बार भी कर्नाटक इस कानून का विरोध कर रहा है। अब तक केरल में अंग्रेजी के साथ ही मलयालम को आधिकारिक भाषा के तौर पर प्रतिष्ठा रही है। लेकिन नए कानून के तहत सरकारी और सरकारी अनुदान प्राप्त स्कूलों में कक्षा 10 तक मलयालम को पहली भाषा के तौर पर अनिवार्य रूप से पढ़ाना जरूरी होगा। इसके साथ ही अदालती फैसलों और कार्यवाही भी अनिवार्य तौर पर मलयालम भाषा में अनूदित की जाएंगी। अब से राज्य विधानसभा में सभी बिल और अध्यादेश मलयालम में पेश किए जाएंगे। इसके साथ ही, अंग्रेजी में प्रकाशित महत्वपूर्ण केंद्रीय और राज्य कानूनों का भी मलयालम में अनुवाद होगा। नए कानून के तहत सूचना तकनीकी विभाग को मलयालम के प्रभावी इस्तेमाल के लिए ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर और इंस्ट्रूमेंट विकसित करने की जिम्मेदारी दी जा रही है। राज्य सचिवालय में मौजूदा पर्सनल एंड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स (ऑफिशियल लैंग्वेज) विभाग का नाम बदलकर मलयालम भाषा विकास विभाग किया जा राह है। इन कदमों के साथ ही राज्य में मलयालम भाषा विकास निदेशालय भी गठित किया जाएगा। भाषायी अस्मिता के लिहाज से देखें तो केरल का यह कदम बेहद क्रांतिकारी और भारतीय भाषाओं के हित में है। लेकिन कर्नाटक की आपत्तियों को भी अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। यहां ध्यान दिया जाना चाहिए कि केरल के कासरगोड जिले में मलयालम की बजाय कन्नड़ भाषी लोग ज्यादा है। राज्य मे इसी तरह तमिल, तुलु, गुजराती और कोंकणीभाषी लोग भी हैं। उनकी अपनी भाषाओं में पढ़ाई वाले स्कूल भी हैं। हालांकि मलयालम भाषा कानून का विरोध तमिल मूल के लोगों ने तो नहीं किया है, लेकिन कर्नाटक के तर्कों में उनकी भी बातें एक तरह शामिल हैं। कर्नाटक सरकार का तर्क है कि यह कानून केरल में रहने वाले कन्नड़ भाषी अल्पसंख्यकों की भाषाई अस्मिता के लिए खतरा है। यह कानून, कर्नाटक भाषियों के अधिकारों का उल्लंघन है। कर्नाटक सीमा क्षेत्र विकास प्राधिकरण का तर्क है है कि कासरगोड और केरल के दूसरे कन्नड़ भाषी क्षेत्रों में भाषाई अल्पसंख्यक छात्र अभी स्कूलों में कन्नड़ को पहली भाषा के तौर पर पढ़ते हैं। केरल में स्कूलों में हिंदी भी पढ़ाई जाती रही है। इसलिए माना जाता है कि केरल में हिंदीविरोधी माहौल नहीं है। लेकिन दिलचस्प यह है कि केरल के विद्वान भी इस कानून के पक्ष में तर्क देते वक्त केंद्र सरकार पर केरल में हिंदी थोपने का आरोप लगाने से नहीं हिचक रहे। दिलचस्प यह है कि ऐसा ही आरोप कर्नाटक की ओर से लगाया जा रहा है, बस वहां हिंदी की जगह मलयालम को थोपे जाने की बात हो रही है। केरल सरकार ने हालांकि सफाई दी है कि जिनकी मातृभाषा तमिल, कन्नड़, तुलु या कोंकणी है, उनके लिए भी कानून में प्रावधान हैं। इस कानून में इस बात की चर्चा है कि राज्य के भाषायी अल्पसंख्यक अपनी भाषा में राज्य सचिवालय, विभागों और स्थानीय सरकारी कार्यालयों से पत्राचार कर सकेंगे। इसके साथ ही, मलयालम के अलावा दूसरी मातृभाषा वाले छात्रों को नेशनल एजुकेशन प्रोग्राम में शामिल भाषाओं में पढ़ाई कर सकेंगे। इसी तरह दूसरे राज्यों या विदेश से आने वाले छात्रों को नौंवी, दसवीं और हायर सेकेंडरी स्तर पर मलयालम की परीक्षा देने से छूट मिलेगी।

जलवायु परिवर्तनः भविष्य नहीं, वर्तमान का महाविनाशकारी संकट

ललित गर्ग

आज मानव सभ्यता जिस सबसे बड़े संकट के सामने खड़ी है, वह युद्ध, महामारी या आर्थिक मंदी नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन है। दुनिया आज जलवायु संकट के ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां हर नया आंकड़ा खतरे की घंटी बनकर सामने आ रहा है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन की ताजा रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि 2015-2025 का दशक अब तक का सबसे गर्म दौर रहा है। यह केवल एक सांख्यिकीय तथ्य नहीं, बल्कि पृथ्वी के बदलते स्वभाव का गंभीर संकेत है। रिपोर्ट बताती है कि ग्रीनहाउस गैसों का स्तर रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच चुका है और पृथ्वी का एनर्जी इम्बैलेंस लगातार बढ़ रहा है। महासागर, जो जलवायु संतुलन के सबसे बड़े नियंत्रक माने जाते हैं, अब 90 प्रतिशत से अधिक अतिरिक्त गर्मी सोख रहे हैं। इसका सीधा अर्थ है कि पृथ्वी का तापमान केवल हवा में ही नहीं, जल और भूमि के भीतर भी बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन अब धीरे-धीरे आने वाली समस्या नहीं रही, बल्कि यह वर्तमान का संकट बन चुका है। दुनिया के अनेक हिस्सों में असामान्य गर्मी, बाढ़, सूखा, चक्रवात और जंगल की आग जैसी घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। प्रति का संतुलन बिगड़ रहा है और मौसम का मिजाज अनिश्चित होता जा रहा है। कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ आ रही है तो कहीं महीनों तक बारिश नहीं हो रही। यह असंतुलन सीधे-सीधे मानव जीवन, कृषि, जल संसाधनों और अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रहा है। इस बदलते मौसम ने सबसे ज्यादा मनुष्य के स्वास्थ्य पर हमला किया है। भारत के संदर्भ में यह संकट और भी गंभीर रूप लेता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में भारत के अनेक शहरों में तापमान 48 से 50 डिग्री तक पहुंच गया, जबकि पहले 45 डिग्री को ही अत्यधिक गर्मी माना जाता था। अब असामान्य गर्मी ने फरवरी और मार्च जैसे महीनों को भी झुलसाना शुरू कर दिया है। हीटवेव की आवृत्ति और तीव्रता दोनों बढ़ रही हैं। इसका असर केवल स्वास्थ्य पर नहीं, बल्कि बिजली, पानी, खेती, श्रम, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। बढ़ती गर्मी ने केवल मानव जीवन ही नहीं, बल्कि वन्यजीव, पेड़-पौधे और सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को भी संकट में डाल दिया है। जलवायु परिवर्तन के पीछे सबसे बड़ा कारण मानव का विकास मॉडल है। कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई, अनियोजित शहरीकरण, औद्योगीकरण और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन पृथ्वी को लगातार गर्म कर रहा है। आज वैश्विक तापमान लगभग एक लाख 25 हजार वर्षों के उच्चतम स्तर के आसपास पहुंच चुका है। यह स्थिति बताती है कि समस्या प्रकृति में नहीं, बल्कि मानव की जीवनशैली और विकास की दिशा में है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियां इस संकट को और अधिक खतरनाक बना रही हैं। दुनिया के अनेक हिस्सों में युद्ध की स्थितियां बनी हुई हैं। युद्ध केवल मानव जीवन और अर्थव्यवस्था को ही नष्ट नहीं करते, बल्कि पर्यावरण को भी गहरा नुकसान पहुंचाते हैं। युद्ध में इस्तेमाल होने वाले विस्फोटक, रसायन, धातु, ईंधन और आग से वातावरण में भारी मात्रा में जहरीली गैसें फैलती हैं। तेल भंडारों में आग, रासायनिक संयंत्रों का नष्ट होना और सैन्य गतिविधियां वातावरण में कार्बन उत्सर्जन को कई गुना बढ़ा देती हैं। इस प्रकार युद्ध और जलवायु परिवर्तन मिलकर पृथ्वी को दोहरे संकट की ओर धकेल रहे हैं। भारत सहित दुनिया के लगभग 75 प्रतिशत जिले किसी न किसी जलवायु जोखिम के दायरे में आ चुके हैं। हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु जैसी नदियों के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लग रहा है। दूसरी ओर समुद्र का जलस्तर बढ़ने से मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे तटीय शहरों पर खतरा मंडरा रहा है। यदि समुद्र स्तर इसी गति से बढ़ता रहा तो आने वाले दशकों में तटीय आबादी का बड़े पैमाने पर विस्थापन हो सकता है। यह केवल पर्यावरण संकट नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संकट भी बन सकता है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए यह स्पष्ट है कि यदि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में तेजी से कटौती नहीं की गई, तो तापमान के नए-नए रिकॉर्ड टूटते रहेंगे और पृथ्वी रहने योग्य स्थान कम होती जाएगी। जल संकट, खाद्य संकट, स्वास्थ्य संकट और प्रवासन जैसी समस्याएं बढ़ेंगी। दुनिया के अनेक वैज्ञानिक अब चेतावनी दे रहे हैं कि यदि तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित नहीं किया गया, तो पृथ्वी का पारिस्थितिक संतुलन गंभीर रूप से बिगड़ सकता है। लेकिन इस संकट में ही अवसर भी छिपा हुआ है। यह समय विकास मॉडल को बदलने का है। ऊर्जा के क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा, जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल ऊर्जा को बढ़ावा देना होगा। शहरों को कंक्रीट के जंगल बनाने के बजाय हरित शहर बनाना होगा।

श्री राम रथ यात्रा का जगह-जगह हुआ स्वागत बजरंग चौक पर हुआ समापन

सामाजिक समरसता के भाव को लेकर निकली राम नवमी पर भव्य रामरथ यात्रा

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी,, भगवान विष्णु के छटवे अवतार, प्रत्येक भारतीय के आराध्य देव भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव राम नवमी पर खण्डवा में विराट 28 वर्षो से सामाजिक समरसता के भाव को लेकर संयोजक डॉ. मुनीश मिश्रा एवं भक्तों द्वारा बडाबम स्थित राम मंदिर से भव्य राम रथ यात्रा निकाली गई। समाजसेवी सुनील जैन ने बताया कि रथ यात्रा बडाबम प्राचीन राम मंदिर से प्रारंभ होकर कुम्हारवेडा, मालीकुंआ, बुधवारा, केवलराम चौक, बाम्बे बाजार, घंटाघर विट्ठल मंदिर से बजरंग चौक स्थित राम मंदिर में रथ यात्रा का समापन हुआ। रथ यात्रा में पुरूष श्वेत वस्त्र एवं महिला केसरिया वस्त्र धारण किये हुए राम भजन के साथ चल रही थी। उल्लेखनीय है कि डॉ. मिश्रा द्वारा सन 1998 से निरंतर रथयात्रा निकाली जा रही है जिसमें सभी उत्साह से शामिल होकर प्रभु की भक्ति के साथ सामाजिक समरसता की झलक दिखाई देती है। बग्गी पर श्रीराम के चित्र के साथ पं. पुष्पहासजी महाराज मुंबई विराजमान थे। ट्राली में मानस रामायण मंडली रामायण पाठ कर रही थी। भक्ति भाव से सरोवार रथ यात्रा का सभी धर्मो द्वारा स्वागत किया गया जिसमें बडाबम पर राजीव शर्मा परिवार, मालीकुंआ पर मुक्तिलाल नरेडी, बुधवारा में दीपू मिठाईवाले, वहीद चौधरी आदि ने रथयात्रा में श्रीराम की वंदना के साथ डॉ. मुनीश मिश्रा का पुष्पमाला से स्वागत कर सामाजिक समरसता का संदेश दिया। घंटाघर चौक पर कान्यकुब्ज ब्राह्मण सखी मंडल द्वारा रथ यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। रथयात्रा का बजरंग चौक स्थित राम मंदिर में समापन हुआ जहां बजरंग चौक मंडल द्वारा धर्म सभा हुई। संयोजक डॉ. मुनीश मिश्रा ने कहा कि भगवान श्रीराम ने हमेशा सत्य के मार्ग पर चलने की हम शिक्षा दी है। रामनवमी का पर्व हमें श्रीराम के जीवन को अपने जीवन, समाज और राष्ट्र की नीति में उतारने का संदेश देता है।

अरिहंत स्कूल का पाँचवी व आठवीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम रहा शत-प्रतिशत

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा पाँचवी आठवीं का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया। नगर की अरिहंत स्कूल का इस वर्ष भी कक्षा पाँचवीं व आठवीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। शाला के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए शाला एवं अपने माता-पिता को गौरवान्वित किया। कक्षा आठवीं अंग्रेजी माध्यम में शिवानी खाटरे ने 96 प्रतिशत प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। दार्शिका गुर्जर एवं डाली चौहान ने 94 प्रतिशत प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा महक गौर ने 93 प्रतिशत प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा 8वीं हिंदी माध्यम में हर्षिता चौहान ने 95 प्रतिशत प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रगति लौवंशी ने 94 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान पर रहीं तथा पूजा मंडलोई ने 93 प्रतिशत प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। कक्षा पाँचवीं हिंदी माध्यम में स्नेहा राजपूत ने 86 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया। ऋषभ जैन ने 85.5 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

जैन धर्म के बड़े धार्मिक अनुष्ठान पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन 11 अप्रैल से 16 अप्रैल तक होगा

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

धार्मिक संस्कारों की नगरी खंडवा में जैन समाज का एक बड़ा धार्मिक अनुष्ठान आयोजित होने जा रहा है जिसकी तैयारियां शुरू हो चुकी है। बजरंग चौक स्थित महावीर दिगंबर जैन मंदिर में मुनीसूव्रत भगवान एवं भरत भगवान की संगमरमर की प्रतिमा एवं आदिनाथ भगवान की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान करने को लेकर इस मंदिर का तीसरा पंचकल्याणक महोत्सव मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज के ससंघ परम सानिध्य में खंडवा नगर में 11 अप्रेल से 16 अप्रैल तक आयोजित होने जा रहा है। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि पंचकल्याणक महोत्सव को लेकर समाज में काफी उत्साह है समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस धार्मिक अनुष्ठान में सहयोगी बनकर पंचकल्याणक को सफल बनाने में अपनी सक्रियता निभा रहा है। पंचकल्याणक महोत्सव तापडिया गार्डन में आयोजित हो, 5 दिनों तक मुनि श्री के सानिध्य में पाषाण की यह प्रतिमाएं पांच पंचकल्याणको के माध्यम से सूर्य मंत्रो से प्रतिष्ठित होकर परमात्मा का रूप लेगी। सचिव सुनील जैन ने बताया कि श्री आदिनाथ जिनबिंब पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर नवकार नगर जैन मंदिर देशना मंडप में विधानाचार्य पीयूष भैया जी द्वारा संगीत मय भजनों के बीच पंचकल्याणक महोत्सव के मुख्य आकर्षण सौधर्म इंद्र महापात्र होने का गौरव चंदाबाई, वंदना संजय, ममता राजेश कासलीवाल परिवार ने प्राप्त किया , दूसरे नंबर के बड़े धनपति कुबेर इंद्र महापात्र बनने का सौभाग्य मंदिर के ट्रस्टी सुरेश, सपना जितेंद्र, समृद्धि संयम कुमार लुहाडिया परिवार ने प्राप्त किया।पंचकल्याणक महोत्सव की पावन विधियों के महा यज्ञनायक बनने का सौभाग्य संगीता पवन कुमार अर्पिता सुदीप कुमार रावका परिवार एवं महोत्सव के यज्ञनायक बनने की पात्रता प्रवीण कुमार अनुज कुमार बैनाडा ने प्राप्त कि, समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि पंचकल्याणक के अन्य इंद्रो का चयन 27 मार्च रात्रि 8:00 बजे आयोजित भजन संध्या में बजरंग चौक स्थित महावीर जैन मंदिर में किया जाएगा।

अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर स्वामी का जन्म महोत्सव 30 मार्च को धार्मिक उत्साह के साथ मनाया जाएगा

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर जियो और जीने दो का संदेश देने वाले अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती महोत्सव 30 मार्च सोमवार को सकल जैन समाज द्वारा मनाई जाएगी। इस उपलक्ष में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी सोमवार को प्रातः 5.30 बजे प्रभात फेरी श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सराफा से प्रारंभ होगी जो विभिन्न मार्गो से होते हूए सराफा स्थित तुलसी उद्यान में पहुचेगी, जहां पर अतिथि श्रीमान वीरेंद्र कुमार जैन, श्रीमती विनोदिनी जैन ,श्रीमती सुभद्रा बाई जैन द्वारा झंडा वंदन किया जाएगा इसके पश्चात प्रफुल्ल कुमार जैन द्वारा प्रभावना वितरण की जाएगी। समाज के सचिव सुनील जैन ने बताया कि वर्षो से जैन मुनियों के आशीर्वाद एवं अनुरोध से खंडवा में सामूहिक रूप से महावीर जयंती पर मनायां पर्व मनाया जाता है जाता है,सोमवार को प्रातः 8 बजे श्रीजी भगवान महावीर की रथ यात्रा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिरजी से प्रारंभ होकर रामगंज, बुधवारा, केवलराम पेट्रोल पंप, बॉम्बे बाजार होते हुए घंटाघर स्थित कीर्ति स्तंभ पर प्रातः9 बजे अतिथियों एसडीम ऋषि सिंघई, डॉ सुभाष जैनी एवं सुरेशचंद लोहाडिया के द्वारा झंडा वंदन किया जाएगा, जहां से रथ यात्रा विट्ठल मंदिर होते हुए श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर घासपुरा पहुंचेगी, वहां पर सामूहिक आरती के पश्चात नमिनाथ श्वेतांबर जैन मंदिर पहुंचेगी जहां पर समाजजन द्वारा सामूहिक आरती की जाएगी। तत्पश्चात रथ यात्रा वापस बजरंग चौक ,घंटाघर ,सराफा होते हुए श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुंचेगी। सुबह 11 बजे श्री पोरवाड़ दिगम्बर जैन धर्मशाला में श्रीजी का अभिषेक पूजन तत्पश्चात अग्रवाल धर्मशाला में स्वामी वात्सल्य भोज का आयोजन सकल जैन समाज एवं जैन सोशल ग्रुप के सौजन्य से रखा गया है।

जिले मे आबकारी एक्ट के प्रकरण में तीन आरोपियों के विरुद्ध की गई कार्यवाही

पीपुल्स प्रवक्ता, खंडवा।

खंडवा कुल 09 गिरफ्तारी वारंट, 41 जमानती वारंट एवं 72 समंस जिले के विभिन्न थानो के द्वारा अलग-अलग न्यायालय के तामील किये गए। दिनांक 26.03.2026 को अवैध शराब बिक्री करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए थाना पंधाना के आरोपी संजु पिता लालु जाति भील उम्र 32 साल निवासी टेमीखुर्द के कब्जे से 10 लीटर कच्ची हाथ भट्टी महुआ शराब कीमती 800/- रूपये की जप्त की गई7 थाना जावर के आरोपी शरद पिता छोगालाल पाटीदार उम्र 50 साल निवासी सतवाडा के कब्जे से 17 क्वार्टर देशी प्लेन शराब के (180 एमएल का प्रत्येक क्वार्टर) कीमती 1700/-रूपये जप्त की गई7 थाना किल्लौद की आरोपी विरेन्द्र सिंह पिता आधार सिंह राजपूत उम्र 42 साल नि. ग्राम गडबडी के कब्जे से 10 लीटर कच्ची महुआ शराब कीमती 1500/-रुपये की जप्त की गई। उपरोक्त सभी आरोपियों के विरुद्ध धारा 34(1) आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है। दिनांक 26.03.2026 को जिला खंडवा में समस्त थाना प्रभारियों एवं यातायात थाना द्वारा यातायात नियमो का उल्लंघन करने वाले दो पहिया एवं चार पहिया वाहन चालको के विरुद्ध बिना नंबर प्लेट, तीन सवारी, बिना हेलमेट, सीटबेल्ट न लगाने वाले, तेज गति, बिना एच.एस.आर.पी, बिना वैध बीमा वाले वाहनों तथा अन्य यातायात नियमो का उल्लंघन करने वाले कुल 19 वाहन चालकों के विरुद्ध एम.व्ही. एक्ट के तहत कार्यवाही की गई एवं समन शुल्क 10,000/-रुपये वसूल किए गए है7 उप पुलिस अधीक्षक यातायात द्वारा जिले के समस्त नागरिकों से यातायात नियमों का पालन करने की अपील की गई है। जिले के विभिन्न थानो मे दिनांक 26.03.2026 को 31 कुल असामाजिक तत्त्वो के विरुद्ध प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की गई है।

स्वामी, भाग्यमीडिया पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक राजेश शर्मा द्वारा प्रदेश वॉच मीडिया ग्रुप 11 प्रेस काम्पलेक्स जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित कर, जी-11 प्रथम तल गोयल निकेत जोन-1 एम.पी. नगर भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित, पिन-462011, संपादक : विनोद शर्मा, फोन नं. 0755-4512708, पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार सभी मामलों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा । RNI No. MPHIN/2016/68059